Status of Women at 75th Anniversary of Indian INDEPENDENCE

Dr. Rajani Shikhare
Dr. Pravin Sonune
Dr. Hanmant Helambe
Dr. Santosh Nagre

Status of Women at 75th Anniversary of Indian Independence

Dr. Rajani Shikhare

Dr. Pravin Sonune

Dr. Hanmant Helambe

Dr. Santosh Nagre

walnutpublication.com

INDIA • UK • USA

Copyright © Dr. Rajani Shikhare, Dr. Pravin Sonune, Dr. Hanmant Helambe & Dr. Santosh Nagre, 2021

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, recording or otherwise, without the prior written permission of the authors.

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the authors. The authors of chapters are solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The publisher does not endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein. The publisher and the authors make no representations or warranties of any kind with respect to this book or its contents. The authors and the publisher disclaim all such representations and warranties, including for example warranties of merchantability and educational or medical advice for a particular purpose. In addition, the authors and the publisher do not represent or warrant that the information accessible via this book is accurate, complete or current.

eBook ISBN: 978-93-5574-033-5

First Published in December 2021

Published by Walnut Publication (an imprint of Vyusta Ventures LLP)
www.walnutpublication.com

USA

6834 Cantrell Road #2096, Little Rock, AR 72207, USA

India

#625, Esplanade One, Rasulgarh, Bhubaneswar – 751010, India

#55 S/F, Panchkuian Marg, Connaught Place, New Delhi - 110001, India

UK

International House, 12 Constance Street, London E16 2DQ, United Kingdom

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में चित्रित स्त्री जीवन

प्रो. रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई,
जिला. बीड महाराष्ट्र

संतोष नागरे
हिंदी विभाग
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई,
जिला. बीड महाराष्ट्र

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता सदियों से हाशिये पर रखे गये समूह की वेदना को बयान करती है। दुनिया की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्ष बाद भी मुख्यधारा से कटी हुई उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश है। स्त्री जीवन की इस त्रासदी के लिए शोषणकारी पुरुष प्रधान व्यवस्था जिम्मेदार है। पुरुषप्रधान व्यवस्था ने स्त्री को हमेशा दोयम स्थान दिया। उसे तालाब की मछलियाँ समझकर चाहरदीवारी के भीतर कैद किया। स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा से आत्मनिर्भर बनी स्त्री इस कैद से मुक्ति के लिए कलम को हथियार बनाकर अपनी लड़ाई खुद लड़ रही है। शिक्षा तथा आत्मनिर्भरता स्त्री मुक्ति के लिए अनिवार्य है। महादेवी वर्मा इस संदर्भ में ठीक ही कहती है- "भारतीय समाज के अध्ययन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि भारतीय स्त्रियों को सबसे पहले आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता है। सामाजिक जीवन में पुरुषों के बराबर सामाजिक पहचान और आर्थिक क्षेत्र में पुरुषों के समान आत्मनिर्भरता मूल रूप से ये दो बातें स्त्री मुक्ति के लिए अनिवार्य है। इससे इतर नारी मुक्ति का कोई और अर्थ नहीं होता।"1

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती हुई पितृसत्ताक समाज के दोहरे मानदंडों द्वारा ठगे जाने की पीड़ा को बयान करती है। साथ ही मुक्ति के लिए संघर्ष कर नया सौंदर्यशास्त्र भी गढ़ती हैं। प्रो. सरस्वती भल्ला इस संदर्भ में ठीक ही कहती है- "स्त्रियों का हाशियों की दुनिया को तोड़ना और अधिकारों के प्रश्न पर सजग होना ही स्त्री मुक्ति का विमर्श है।.....स्त्री विमर्श से उठने

वाले प्रश्न मात्र मुक्ति से ही नहीं जुड़े हैं, अपितु पितृसत्ताक समाज के दोहरे मानदंड, पितृक मूल्य, लिंगभेद की राजनीति तथा स्त्री उत्पीड़न के अंतर्निहित कारणों को समझने की दृष्टि भी देते हैं।"2

स्त्री जीवन का इतिहास मूलतः पुरुषप्रधान व्यवस्था द्वारा ठगे जाने का रहा है। बेटी को पराया धन मानने की संकीर्ण मानसिकता के कारण हमारे देश में कन्या भ्रूण हत्या का प्रमाण बढ़ता ही जा रहा है। लिंगभिन्नता की राजनीति के कारण स्त्री-पुरुष विषमता के विषाक्त संस्कार बचपन से ही बच्चों पर किये जाते हैं। जिसके कारण एक ही परिवार के भाई-बहन की शिक्षा-दीक्षा, रहन-सहन, खान-पान तथा सुख-सुविधा में जमीन-आसमान का अंतर देखने को मिलता है। पराया धन समझी जाने वाली बेटी का कन्यादान कर माँ-बाप अपने बोझ से छुटकारा पाते हैं। बेटी के सुरक्षित भविष्य के लिए विवाह के समय दिया गया दहेज भी उसकी सुरक्षा की गारंटी नहीं दे पाता। दहेज के चलते विवाह संस्कार न रहकर एक व्यवहार बनकर रह गया है। दहेज उत्पीड़न की घटनाएँ आये दिन समाज में घटित होती रहती हैं। फूल-सी लड़कियों का कोयला बनाकर उसे आत्महत्या का रूप देने वाले दहेज लालचियों की पोल खोलते हुए उदय प्रकाश 'औरतें' कविता में कहते हैं-

"एक औरत के हाथ जल गये है तवे में
एक के ऊपर तेल गिर गया है, कड़ाही का खौलता हुआ
अस्पताल में हजार प्रतिशत जली हुई औरत का कोयला दर्ज कराता है
अपना मृत्यु-पूर्व बयान कि उसे नहीं जलाया किसी ने
उसके अलावा बाकी हर कोई है निर्दोष
गलती से उसके ही हाथों फूट गयी किस्मत
और फट गया स्टोव्ह !"3

ससुराल में मिलती इन नरक यातनाओं से मुक्ति के लिए वह कई बार भागना चाहती है, पर भाग नहीं पाती क्योंकि उसका अपना कोई घर नहीं होता। दो परिवारों को जोड़नेवाली लड़कियाँ अंततः हवा, धूप और मिट्टी बनकर रह जाती है। अनामिका कहती है-

"लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता।"4

स्त्री अपने जीवन में बेटी, बहन, पत्नी, माँ आदि कई तरह की भूमिकाएँ निभाती है। अपनी हर भूमिका को न्याय देने के लिए हर समय अपने आप को बिखेरकर वह घर को निखारती है। भोजन से लेकर बच्चों के होम-वर्क और उनके सुयोग होने तक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन करने वाली स्त्री को नजरअंदाज करने वाली कृतघ्न मानसिकता की पोल खोलती हुई ममता कालिया 'खाँटी घरेलू औरत' कविता में कहती है-

"खा-पीकर अपने कृतघ्न पेट पर हाथ फेरते
डकार मारते, परिवार के पुरुष ने कहा
दुनिया कहां से कहां पहुँच गयी,
पर तुम वहीं की वहीं रही
खाँटी घरेलू औरत !"5

स्त्री चाहे गृहिणी हो या कामकाजी पुरुषप्रधान व्यवस्था ने उसे कभी बराबर की जगह नहीं दी। तीन तलाक, हलाला तथा देवदासी जैसी सामाजिक-धार्मिक कुप्रथओं के चलते स्त्री जीवन नरक बनकर रह गया है। स्त्री को देवी के रूप में पूजे जाने वाले इस देश में स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्ष बाद भी जहां एक ओर मंदिरों में प्रवेश नहीं दिया जाता वहीं दूसरी और उन्हें मुर्गियों- बकरियों के माफिक देवताओं को अर्पण किया जाता है। वाहरू सोनवणे 'देवदासी' कविता के माध्यम से धर्म की आड़ में स्त्रियों के साथ किये जाने वाले दुष्कर्म की पोल खोलते हुए कहते हैं-

"एक मुल्क / जहाँ देवता को देते हैं
लड़कियों का चढ़ावा / मुर्गियों-बकरियों के माफिक
जवान होते-होते / बाहों में भरों
कोने-कछाले ले-जाकर / 'वापर' लो कौन देखता है ?
घर है न दुआर / देवताओं की बकरियाँ ये
देवदासी कहते हैं इन्हें !"6

स्त्री न घर में सुरक्षित है न बाहर, न मंदिर में न जंगल में। आये दिन महिलाओं के साथ की जानेवाली छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार, सामुहिक दुष्कर्म जैसी घटनाओं से 'आखिर कब तक' इस देश के अखबारों का हेडलाईन रंगता और सजता रहेगा ? स्वतंत्रता के पचहतेतर वर्ष बाद भी इस देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री की असुरक्षा को लेकर जहीर कुरेशी कहते हैं-

"आज के इस दौर में भी क्या नहीं होता
गाँव से लेकर शहर तक, नारियों के साथ।"7

वैश्विकरण से उपजी उपभोक्तावादी बाजार संस्कृति में स्त्री एक उपभोग की वस्तु बनकर रह गयी है। बाजार संस्कृति का एक ही मूल्य है- लूट। इस लूट के लिए वह विज्ञापन का सहारा लेती है। धन के लिए स्त्री के तन की नुमाइश कर उसके मन की उपेक्षा करनेवाली इस उपभोकतावादी संस्कृति के फ्रेम से स्त्री को बाहर आने की आवश्यकता है। अजित कुमार राय विज्ञापन बाजार और नारी सौंदर्य को लेकर कहते हैं-

"कब तक बिकते रहेंगे बाजार में
स्त्रियों के ग्लैमरस चित्र ?
क्या स्त्री चित्रों के फ्रेम से बाहर आना चाहेगी
क्षण-प्रतिक्षण बदलती जीवंत मुद्राओं
एवं नयी भंगिमाओं के साथ ?
चंद्रमा दूर से ही अच्छा लगता है।
नारी सौंदर्य को 'नजर' लग गयी है
विज्ञापन बाजार की।"8

बाजार के अनुरूप लिखे गये साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श महज देह विमर्श बनकर न रह जाए। बाजार की उपभोक्तावादी संस्कृति की चकाचौंध में फंसी स्त्री की स्थिति अत्याधिक शोचनीय है। स्त्रियों के आभूषण उसकी सुंदरता के नहीं गुलामी के द्योतक हैं। उसकी सुंदरता पुरुषप्रधान व्यवस्था द्वारा निर्मित सौंदर्य के मानदंडों से मुक्त होने में है। इसी कारण कवि अनुज लुगुन को अपने जुड़े में साहस का फूल, कानों में उम्मीद की बालियाँ, धरती को अपने सर पर घड़े की तरह ढ़ोए, अपने हक की लड़ाई में आत्मसम्मान

का बीज बोने वाली 'उलगुलान की औरतें' अपने संघर्षरूपी सौंदर्यबोध के कारण खूबसूरत लगती हैं। अपने अस्तित्व, प्रकृति और पर्यावरण को बचाये रखने के लिए संघर्षरत स्त्रियों के सौंदर्यबोध को अधोरेखित करते हुए अनुज लुगुन कहते हैं-

"दुःस्वप्नों के लिए / उन्होंने अपने जुड़े में
खोंस रखा है साहस का फूल
कानों में उम्मीद को / बालियों की तरह पिरोया हैं
धरती को सर पर घड़े की तरह ढ़ोए / लचकती हुईं चली जा रही हैं
उलगुलान की ओरतें !
धरती से प्यार करने वालों के लिए / उतनी ही खूबसूरत
और उतनी ही खतरनाक / धरती के दुश्मनों के लिए।"9

स्त्री जीवन का इतिहास लिखने वालों ने मात्र उसकी आँखों से बहते आँसू, लहराते आंचल, बादल बनकर बरसती जुल्फों, चूड़ियों की खनखनाहट और पायल की झनकार को ही उसमें दर्ज किया है। पुरुषप्रधान व्यवस्था की संकीर्ण मानसिकता द्वारा लिखे गये इस एकांगी इतिहास के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजाती निर्मला पुतुल इतिहास में अपने संघर्ष को दर्ज कराने की अपनी संकल्पबद्धता को दोहराती हुई कहती है-

"फूटेगा एक नया विद्रोह का बिगुल
हमें भूगोल की सारी सीमाएँ लाँघकर
पहुँच जायेंगे इतिहास के उस गलियारे में
और दर्ज करेंगे अपना सशक्त हस्ताक्षर
हम समय की छाती पर पाँव रखकर
चढ़ेंगे इतिहास की सीढ़ियाँ / और बुलंदियों पर पहुँचकर
फहराएंगे अपने नाम का झंड़ा
कुछ इस तरह / हम स्त्रियाँ दर्ज कराएंगी
इतिहास में अपना इतिहास।"10

सारांश-

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता सदियों से हाशिये पर जीवन जीने के लिए विवश समूह की पीड़ा को अभिव्यक्त करती है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करनेवाली स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती हुई पितृसत्ताक समाज के दोहरे मानदंडों, पैतृक मूल्य, लिंगभेद की राजनीति तथा स्त्री उत्पीड़न के अंतर्निहित कारणों को बेनकाब कर संवैधानिक मूल्यों के आधार पर स्त्री-पुरुष समानता के समर्थनार्थ उसकी वकालत करती हैं। कुल मिलाकर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता स्त्री सक्षमीकरण के पथ में आने वाले अवरोधों को दूर कर स्त्री मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

संदर्भ

1. डॉ. प्रभा दीक्षित, स्त्री अस्मिता के सवाल, पृ. 35
2. संपा. प्रो. श्रीराम शर्मा, समकालीन हिंदी साहित्यः विविध आयाम, पृ. 53-54
3. उदय प्रकाश, कवि ने कहा (चुनी हुई कविताएँ), पृ. 97
4. अनामिका, कहती हैं औरतें, पृ. 152
5. ममता कालिया, खाँटी घरेलू औरत, पृ. 60
6. वाहरू सोनवणे, पहाड़ हिलने लगा है, पृ. 21
7. संपा. डॉ. मधु खराटे, जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें, पृ. 92
8. अजित कुमार राय, रथ के धूल भरे पाँव, पृ. 54
9. संपा. वंदना टेटे, लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ, पृ. 187
10. निर्मला पुतुल, बेघर सपने, पृ. 74-75

The book is an attempt to analyze the progress achieved towards the women empowerment in particular and gender equality in general at 75th anniversary of India's Independence and also the road ahead in this regard from highlighting the challenges and hurdles and suggesting remedial measures in order to achieve women empowerment in India.

Dr. Rajani Shikhare

Dr. Rajani Shikhare is working as the Principal of R.B. Attal College, Georai Dist Beed (MS). She is the author of Nirala aur Dinkar ki Kavya Chetna , Stri Vimarsh ke bahane se, Swami Vivekanand Vichar Darshan. She was awarded Hindi Sevi Samman for her contribution in language and literature by Rashtriya Hindi Sevi Mahasangh, Indore(MP). She was honoured as Godawari Udyojak Mahila Purskar for her contribution in educational sector.

Dr. Pravin Sonune

Dr. Pravin Sonune is the Head, Department of English at R.B. Attal College, Georai. His areas of interests are Feminism, Multiculturalism and Indian Writing in English. He edited a book entitled Changing Nature of Human Relationship.

Dr. Hanmant Helambe

Mr. Hanmant Helambe is presently working as Head, Department of Public Administration at R. B. Attal College Georai, Dist. Beed(MS). He has to his credit a book on New Trends in Public Administration and one edited book on Disaster Management. His research interest area is Administrative Reforms in India.

Dr. Santosh Nagre

Mr. Santosh Nagre is presently working as Head, Department of Hindi at R. B. Attal College Georai, Dist. Beed(MS). He is an emerging and passionate scholar in the field of Gender Studies and Feminism. He has published research papers in various national/ international journals.

walnutpublication.com
INDIA • UK • USA

ISBN 978-935574033-5